69 - एकोनसप्ततितम दशकम्
रास क्रीडा

केश पाश धृत पिञ्छिका विततति सञ्चलन् मकर कुण्डलं
हार जाल वन मालिका ललित मङ्ग राग घन सौरभम् ।
पीत चेल धृत काञ्चि काञ्चित मुदञ्च दंशु मणि नूपुरं
रास केलि परिभूषितं तव हि रूप मीश कलयामहे ॥ ॥69-1॥

ताव देव कृत मण्डने कलित कञ्चुलीक कुच मण्डले
गण्ड लोल मणि कुण्डले युवति मण्डलेऽथ परि मण्डले ।
अन्तरा सकल सुन्दरी युगल मिन्दिरा रमण सञ्चरन्
मञ्जुलां तदनु रास केलि मयि कञ्जनाभ समु पादधाः ॥ ॥69-2॥

वासुदेव तव भासमान मिह रास केलि रस सौरभं
दूरतोऽपि खलु नार दागदित माकलय्य कुतु काकुला ।
वेष भूषण विलास पेशल विलासिनी शत समावृता
नाकतो युगपदागता वियति वेगतोऽथ सुर मण्डली ॥ ॥69-3॥

वेणुनाद कृत तान दान कल गान राग गति योजना
लोभनीय मृदु पाद पात कृत ताल मेलन मनोहरम् ।
पाणि संक्वणित कङ्कणं च मुहुरंस लम्बित कराम्बुजं
श्रोणि बिम्ब चल दम्बरं भजत रासकेलि रस डम्बरम् ॥ ॥69-4॥

स्पर्धया विरचि तानुगान कृत तार तार मधुर स्वरे
नर्तनेऽथ ललिताङ्ग हार लुलिताङ्ग हार मणि भूषणे ।
सम्मदेन कृत पुष्प वर्ष मल मुन्मिषत् द्विषदां कुलं
चिन्मये त्वयि निलीयमान मिव सम्मुमोह स वधूकुलम् ॥ ॥69-5॥

स्विन्न सन्न तनु वल्लरी तदनु कापि नाम पशु पाङ्गना
कान्त मंस मवलम्बते स्म भृश तान्ति भार मुकुलेक्षणा ॥
काचि दाचलित कुन्तला नव पटीर सार घन सौरभं
वञ्चनेन तव सञ्चु चुम्ब भुज मञ्चितोरु पुल काङ्कुरम् ॥ ॥69-6॥

कापि गण्ड भुवि सन्निधाय निज गण्ड माकुलित कुण्डलं
पुण्य पूर निधि रन्ववाप तव पूग चर्वित रसा मृतम् ।
इन्दिरा विहृति मन्दिरं भुवन सुन्दरं हि नटनान्तरे
त्वा मवाप्य दधु रङ्गना: किमु न सम्मदोन्मद दशान्तरम् ॥ ॥69-7॥

गान मीश विरतं क्रमेण किल वाद्य मेलन मुपारतं
ब्रह्म सम्मद रसाकुला: सदसि केवलं ननृतु रङ्गना: ।
नाविदन् नपि च नीविकां किमपि कुन्तली मपि च कञ्चुलीं
ज्योतिषा मपि कदम्बकं दिवि विलम्बितं किम परं ब्रुवे ॥ ॥69-8॥

मोद सीम्नि भुवनं विलाप्य विहृतिं समाप्य च ततो विभो
केलि सम्मृदित निर्मलाङ्ग नव घर्म लेश सुभ गात्मनाम् ।
मन्म थासहन चेतसां पशुप योषितां सुकृत चोदित:
ताव दाकलित मूर्ति रादधिथ मारवीर परमोत्सवान् ॥ ॥69-9॥

केलि भेद परि लोलिताभि रति लालिताभि रब लालिभि:
स्वैर मीश ननु सूरजा पयसि चारु नाम विहृतिं व्यधा: ।
काननेऽपि च विसारि शीतल किशोर मारुत मनोहरे
सून सौरभ मये विलेसिथ विलासिनी शत विमोहनम् ॥ ॥69-10॥

कामिनी रिति हि यामिनीषु खलु कामनीयक निधे भवान्
पूर्ण सम्मद रसार्णवं कमपि योगि गम्य मनुभावयन् ।
ब्रह्म शङ्कर मुखान पीह पशु पाङ्ग नासु बहुमानयन्
भक्त लोक गमनीय रूप कमनीय कृष्ण परिपाहि माम् ॥ ॥69-11॥

॥ सदा सर्वत्र गोविन्द नाम संकीर्तनम् गोविन्दा....गोविन्दा ॥
॥ श्री गुरुवायूरप्पा शरणम् श्री हरये नमः॥